New Indian Express 24-April-2021

2 weeks of clean-up: 3 tonnes of garbage cleared from Korattur lake

EXPRESS NEWS SERVICE
@ Chennai

OVER three tonnes of garbage have been cleared from the Korattur lake by a group of volunteers in the past couple of weeks. A group of nearly 50 volunteers have joined hands to clean the lake every weekend to its original condition.

Like-minded nature conservationists from the area began a 52-week challenge on April 11 and have been cleaning the polluted lake ever since. Initially the drive happened on Sundays, but now it is to be shifted to Saturdays here on, owing to the complete lockdown.

"The lake is heavily polluted. Most of the waste comprises liquor bottles. This not only spoils the lake, but questions the safety of the area. We have also complained to the police," said S Sekaran, Korattur People's Welfare and Awareness Trust. Though there is a 3.5-km walkway surrounding the lake, many avoid it due to the stench that emanates from the garbage. It may be noted that the lake was once a primary drinking water source for over 18,000 houses in the area.

As a result of discharge of effluents, groundwater table would again deplete. Soon, tap water will give out foul smell and we'd be forced to buy drinking water, just like every year

P Karthika, Resident

Another issue which has been going on for years is the release of industrial effluents into the lake. The National Green Tribunal had also acted on this and passed an order to form a joint committee and suggest measures. A recent inspection report by the State to NGT found that the top soil of Korattur lake is heavily contaminated.

Rashtriya Sahara 24-April-2021

नदी जोड़ने पर पुनर्विचार जरूरी

केन-बेतवा लिंक

पंकज चतुर्वेदी

सारी दुनिया जब अपने यहां कार्बन फुट प्रिंट घटाने को प्रतिबद्ध है वहीं भारत में नदियों को जोड़ने की परियोजना लागू की जा रही है। उसकी शुरुआत बुंदेलखंड से होगी जहां केन और बेतवा को जोड़ा जाएगा। असल में आम आदमी नदियों को जोड़ने का अर्थ समझता है कि किन्हीं पास बह रही दो नदियों को किसी नहर जैसी संरचना के माध्यम से जोड़ दिया जाए, जिससे जब एक में पानी कम हो तो दूसरे का उसमें मिल जाए। पहले यह जानना जरूरी है कि असल में नदी जोड़ने का मतलब है, एक विशाल बांध और जलाश्य बनाना और उसमें जमा दोनों नदियों के पानी को नहरों से उपभोक्ता तक पहुंचाना।

केन्बेतवा जोड़ योजना 2008 में 500 करोड़ रुपये की लागत से तैयार हुई थी, 2015 में इसकी अनुमानित लागत 1800 करोड़ और अब 4500 करोड़ रुपये बताई जा रही है। सबसे बड़ी बात यह कि जब नदियों को जोड़ने की योजना बनाई गई थी, तब देश और दुनिया के सामने ग्लोबल वार्मिंग, ओजोन क्षरण, ग्रीन हाउस इफेक्ट्स जैसी चुनौतियां नहीं थीं और गंभीरता से देखें तो नदी जोड़ने जैसी परियोजनाएं वैश्विक संकट को और बढ़ा देंगी। जलवायु परिवर्तन के कारण प्राकृतिक आपदा का स्वाद बुंदेलखंड के लोग चख ही रहे हैं। ग्लोबल वार्मिंग से उपज रही जलवायु अनियमितता और इसके दुप्रभाव के प्रति सरकार और समाज में बैठे लोग कम ही वाकिफ या जागरूक हैं। 'नदियों का पानी समुद्र में ना जाए, बारिश में लबालब होती नदियां गांवोंखेतों में घुसने के बजाय ऐसे स्थानों की ओर मोड़ दी जाएं जहां उन्हें बहाव मिले तथा समयजरूरत पर इनके पानी का इस्तेमाल किया जा सके।'इस मूल भावना को लेकर नदियों को जोड़ने के पक्ष में तर्क दिए जाते रहे हैं।

लेकिन विडंबना है कि केन-बेतवा के मामले में तो 'नंगा नहाए निचोड़ै क्या' की लोकोक्ति सटीक बैठती है। केन और बेतवा दोनों के ही उद्गम स्थल मध्य प्रदेश में हैं। दोनों नदियां लगभग समानांतर एक ही इलाके से गुजरती हुई

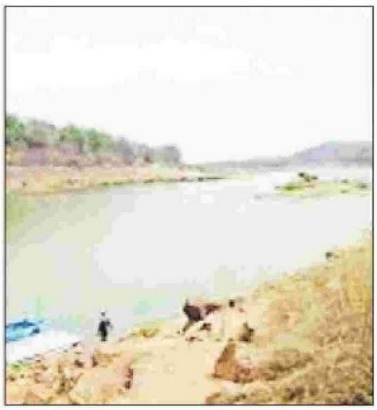

उत्तर प्रदेश में जा कर यमुना में मिल जाती हैं। जाहिर है कि जब केन के जल ग्रहण क्षेत्र में अल्प वर्षा या सूखे का प्रकोप होगा तो बेतवा की हालत भी ऐसी ही होगी। तिस पर 4500 करोड़ की योजना न केवल संरक्षित वन के नाश, हजारों लोगों के पलायन का कारक बन रही है, बल्कि इससे उपजी संरचना दुनिया का तापमान बढ़ाने का संयत्र भी बन जाएगी। नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर स्पेस रिसर्च (आईएनपीसी), ब्राजील का एक गहन शोध है कि दुनिया के बड़े बांध हर साल 104 मिलियन मीट्रिक टन मिथेन गैस का उत्सर्जन करते हैं और यह वैश्विक तापमान में वृद्धि के कुल मानवीय योगदान का चार फीसदी है। सनद रहे कि बड़े जलाश्य, दलदल बड़ी मात्रा में मिथेन का उत्सर्जन करते हैं। ग्लोबल वार्मिंग के लिए जिम्मेवार माने जाने वाली गैसों को ग्रीनहाउस या हरितगृह गैस कहते हैं। ये गैसें सूर्य की गर्मी के बड़े हिस्से को परावर्तित नहीं होने देती हैं, जिससे गर्मी की जो मात्रा वायुमंडल में फंसी रहती है, उससे तापमान में वृद्धि हो जाती है। केन-बेतवा नदी को जोड़ने के लिए छतरपुर जिले के ढोढन में 77 मीटर ऊंचा और 2031 मीटर लंबा बांध और 221 किलोमीटर लंबी नहरें भी बनेंगी। इससे होने वाले निर्माण, पुनर्वास आदि के लिए जमीन तैयार करने और इतने बड़े बांधों और नहरों से दलदल बनेगा और यह मिथेन गैस के उत्सर्जन का बड़ा कारण बनेगा।

इस परियोजना का सबसे बड़ा असर दुनिया भर में मशहूर तेजी से विकसित बाघ क्षेत्र के नुकसान के रूप में भी होगा। पन्ना नेशनल पार्क का 41.41 वर्ग किलोमीटर वह क्षेत्र पूरी तरह जलमग्न हो जाएगा, जहां आज 30 बाघ हैं। जंगल के 33 हजार पेड़ भी काटे जाएंगे। इतने बड़े हजारों पेड़ तैयार होने में कम से कम आधी सदी का समय लगेगा। जाहिर है कि जंगल कटाई और वन का नष्ट होना जलवायु परिवर्तन को प्रभावित करने वाले कारक हैं। ऐसे में जरूरी है कि सरकार नई वैश्विक परिस्थितियों में नदियों को जोड़ने की योजना का मूल्यांकन करे। सबसे बड़ी बात यह कि इतने बड़े पर्यावरणीय नुकसान, विस्थापन, पलायन और धन व्यय करने के बाद भी बुंदेलखंड के महज तीन से चार जिलों को मिलेगा क्या? इसका आकलन भी जरूरी है। इससे एक चौथाई से भी कम धन खर्च कर समूचे बुंदेलखंड के पारंपरिक तालाब, बावड़ी, कुओं और जोहड़ों की मरम्मत की जा सकती है। सिकुड़ गई छोटी नदियों को उनके मूल स्वरूप में लाने के लिए काम हो सकता है।

Punjab Kesari 24-April-2021

चमोली में भारत-चीन सीमा के पास ग्लेशियर टूटा, रैणी में ऋषिगंगा का जलस्तर बढ़ा

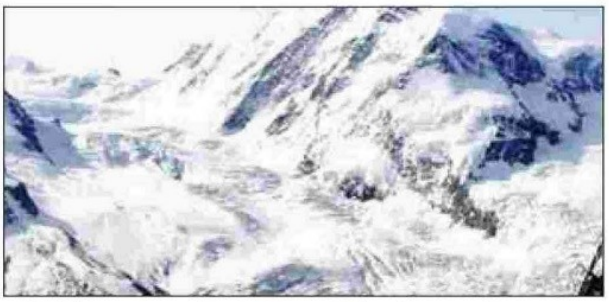

देहरादून, (पंजाब केसरी): भारत-चीन सीमा को जोड़ने वाली सड़क पर सुमना 2 में ग्लेशियर टूटने की सूचना मिली है। बताया जा रहा है कि भारी बर्फबारी की वजह से ये ग्लेशियर टूटा है। ग्लेशियर टूटने के बाद से ही संपर्क कट चुका है। किसी भी तरह की बातचीत संभव नहीं हो रही है। खबर है कि यहां मजदूर सड़क कटिंग के कार्य में रहते हैं। बीआरओ के अधिकारी लगातार संपर्क करने की कोशिश कर रहे हैं,लेकिन अभी तक सफलता नहीं मिली है। कई जगहों पर बर्फबारी की वजह से सड़क बंद हो गई है, ऐसे में वहां तक पहुंचना भी बड़ी मुश्किल है। एनडीआरएफ की सूत्रों की तरफ से बताया जा रहा है कि ग्लेशियर टूटने के बाद से रैणी में ऋषिंगगा नदी का स्तर काफी ज्यादा बढ़ गया है और स्थिति चिंताजनक बनी हुई है। प्राप्त सूचना के अनुसार जल स्तर 2 फुट तक बढ़ा है। अभी तक जान-माल की हानी की कोई खबर नहीं मिली है। एजेंसियां लगातार मौके पर पहुंचने की कवायद कर रही हैं। मालूम हो कि पिछले कुछ दिनों से भारी बर्फबारी हो रही है और बारिश का आना लगातार जारी है। बताया जा रहा है कि ग्लेशियर भी इसी वजह से टूटा है. स्थिति का जायजा स्थानीय एजेंसीज के द्वारा लिया जा रहा है ग्लेशियर टूटने के बाद से ही स्थानीय लोग काफी सदमे में हैं और उनके मन में फरवरी में चमोली में टूटे ग्लेशियर की यादें ताजा हो गई हैं। शुक्रवार को हुई इस घटना से कई गांव प्रभावित हो गए हैं और संपर्क भी बड़े स्तर पर टूटा है। मालूम हो कि इसी साल 7 फरवरी को चमोली ग्लेशियर टूटने की घटना सामने आई थी।